43

दृष्टि The Vision

27 AUG 2019

drishti

ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

DTVF/19(JS)–ESY-E3

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Sandeep Kumar Patel **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AWAKE-19/C001

Center & Date: Delhi, 26/08/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0867996

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

_____

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: **125 × 2 = 250**

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: **125 × 2 = 250**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION–A

1. प्रौद्योगिकी वह सशक्त साधन है जो उम्मीद और अवसर के बीच की दूरी तय करता है।
   Technology is that powerful tool which covers the distance between hope and scope.
2. अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।
   Farmer's emancipation lies in innovation rather than mercy.
3. भारत के वे अनिवार्य सामाजिक परिवर्तन जिन्हें आप आगामी कुछ दशकों में होता देखना चाहेंगे।
   The necessary social changes that you wish to see in India in the next few decades.
4. पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान तलाशती भारतीय विदेश नीति।
   India's foreign policy: Exploring solutions to the problems of the modern world with traditional values.

खंड–B / SECTION–B

1. सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।
   The best education is that which not only gives us information, but also ensures our coexistence with nature.
2. राजनीति में आदर्श अपेक्षित भी है और उपेक्षित भी।
   Ideals in politics are required as well as neglected.
3. समान के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये और असमान के साथ असमान।
   Equals should be treated equally and unequals unequally.
4. उस समाज में स्वतंत्रता अर्थहीन है, जिसमें गलती करने की आज़ादी न हो।
   Liberty is meaningless in that society where there is no freedom to commit mistakes.

www.drishtiias.com
Contact 7501, 8448485517
Copyright Drishti Vision Foundation

खंड–A / SECTION–A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. प्रौद्योगिकी वह सशक्त साधन है जो उम्मीद और अवसर के बीच की दूरी तय करता है।
Technology is that powerful tool which covers the distance between hope and scope.

2. अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।
Farmer's emancipation lies in innovation rather than mercy.

3. भारत के वे अनिवार्य सामाजिक परिवर्तन जिन्हें आप आगामी कुछ दशकों में होता देखना चाहेंगे।
The necessary social changes that you wish to see in India in the next few decades.

4. पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान तलाशती भारतीय विदेश नीति।
India's foreign policy: Exploring solutions to the problems of the modern world with traditional values.

*

पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान तलाशती भारतीय विदेश नीति

भारत विश्व की सबसे प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक रहा है जहाँ प्रथम नगरीय सभ्यता लगभग 4500 वर्षों पहले फल-फूल रही थी जिसे आज 'हड़प्पा सभ्यता' कहा जाता है। गौरतलब है कि यह विश्व की अन्य सभ्यताओं जैसे मेसोपोटामिया,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

मिस्र की सभ्यता आदि के समकालिन थी अतः यह स्वभाविक ही था कि एक स्वतंत्र विदेश नीति का विकास रहा होगा। एक स्पष्ट विदेश नीति में कुछ मूल्यों का होना आवश्यक है जो भारतीय विदेश नीति में आरंभ से ही दिखाई पड़ते हैं, यही कारण है कि इन मूल्यों की निरंतरता वर्तमान विदेश नीति में भी दिखाई पड़ती है। किंतु यह अवश्य विचारणीय है कि वैश्वीकरण के इस दौर में इन परंपरागत मूल्यों की क्या प्रासंगिकता है?

दरअसल एक संप्रभु एवं स्वतंत्र राष्ट्र द्वारा दूसरे देशों से संबंध बनाने, व्यापार करने एवं अन्य व्यवहारों के लिये जिन मूल्यों, नियमों एवं आदर्शों का पालन किया जाता है

डम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उसे उस देश की 'विदेश नीति' कहा जाता है। एक स्पष्ट विदेश नीति किसी भी राज्य के लिये आवश्यक होती है। इसके द्वारा उस राज्य या देश के शासक नीतियाँ बना सकते हैं जो अपेक्षाकृत स्थायी हों एवं किंतु परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तनशील भी हों फलतः राष्ट्र का विकास सुनिश्चित हो सके।

भारतीय इतिहास से ज्ञात होता है कि यहाँ विदेश नीति की एक समृद्ध परंपरा रही है। मौर्यों के काल में 'चाणक्य' ने अपनी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में इसके संकेत दिये थे। वहीं कुषाणों के समय भारत का विदेश व्यापार यूरोप से अत्यंत बढ़ गया था, इसी समय पूर्वी एशिया से भी व्यापार बढ़ा फलतः विदेश नीति का विकास हुआ। मध्यकाल में

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अरब देशों से भारतीय शासकों के सुदृढ़ संबंध थे। इस प्रकार स्वतंत्रता ~~आने~~ आने के पश्चात भारतीय विदेश नीति को एक लंबी परंपरा प्राप्त हुई जिसे नेहरू ने कुछ हद तक आत्मसात किया।

ध्यातव्य है कि इतनी लंबी परंपरा विकसित होने के साथ ही विदेश नीति के परंपरागत मूल्यों में निरंतरता विद्यमान रही। यही कारण है कि भारतीय राजाओं ने विदेशों पर आक्रमण न करने की नीति अपनाई, यदि चोलों को छोड़ दिया जाये तो कमोबेश ऐसा दिखाई पड़ता है।

'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना भारतीय विदेश नीति का निहित गुण था, यही कारण है कि अनेक आक्रमणों के बावजूद अनेक संस्कृतियों का भारतीय

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

संस्कृति में आत्मसातीकरण होता गया परिणामस्वरूप सामासिकता संस्कृति का विकास हुआ।

पारंपरिक विदेश नीति प्रायः 'आदर्शवाद' की ओर झुकी थी जिसके अंतर्गत दूसरे राष्ट्रों की संप्रभुता का सम्मान एवं सामंजस्य का गुण शामिल था। ये मूल्य स्वतंत्रता के पश्चात 'नेहरूवियन विदेश नीति' में शामिल किये गये जिसे 'पंचशील सिद्धांत' में देखा जा सकता है।

किंतु नेहरू युग में भी भारत ने यथार्थवाद एवं आदर्शवाद का सामंजस्य करते हुये समस्याओं का समाधान किया। 'गुट निरपेक्ष आंदोलन' वस्तुतः इसी दूरदर्शितावादी नीति का परिणाम था।

स्वतंत्रता के पश्चात् जब विश्व दो ध्रुवों में बंटा हुआ था तब

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

'गुटनिरपेक्ष आंदोलन' प्रस्तावित किया गया ताकि किसी एक पक्ष में न झुककर दोनों पक्षों से लाभ प्राप्त किया जा सके एवं गलत कृत्यों का विरोध किया जा सके। ध्यातव्य है कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने तत्कालीन समस्याओं जैसे उपनिवेशवाद, शस्त्रीकरण, परमाणु युद्ध आदि के खिलाफ लामबंदी की तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आवाज उठाई।

उदारीकरण के पश्चात भारतीय विदेश नीति में नया दौर शुरू हुआ जब 'यथार्थवाद' को अधिक महत्व दिया गया एवं 'लुक ईस्ट' के माध्यम से पूर्व में संबंध प्रगाढ़ किये गये तो अफ्रीका एवं यूरोप से भी "कनेक्टिविटी" स्थापित की गई। उदारीकरण के पश्चात

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

विदेश नीति में आर्थिक पक्ष प्रबल हुआ। किंतु साथ-साथ परंपरागत मूल्यों को अपनाते हुये 'गुजराल डॉक्ट्रिन' के माध्यम से पड़ोसी देशों को एकमुश्त सहायता देने की पहल की गई ताकि दक्षिण एशिया की सामूहिक संवृद्धि की जा सके।

वर्तमान में इसी नीति को विस्तार करते हुये व्यापक स्तर पर लागू किया जा रहा है, 'पड़ोसी प्रथम' की नीति के साथ भारत अपने पड़ोसियों के साथ बेहतर संबंध बनाने पर बल दे रहा है तो 'एक्ट ईस्ट', ~~सेंट्रल~~ कनेक्ट सेंट्रल एशिया आदि के माध्यम से सहयोग एवं सामंजस्य पर बल दिया जा रहा है। पारंपरिक मूल्यों के साथ विभिन्न देशों से सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक संबंधों के माध्यम से सामूहिक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

रूप से गरीबी, बेरोजगारी का उन्मूलन एवं अवसंरचना निर्माण, क्षमता निर्माण ध्व तथा कौशल विकास जैसे प्रयास भारत अपनी विदेश नीति के माध्यम से कर रहा है। अफगानिस्तान को सहयोग, मालदीव को एकमुश्त सहायता, दक्षिण एशिया उपग्रह जैसे अनेक प्रयास भारत ने किये हैं।

वर्तमान में विश्व के समक्ष समस्याओं के समाधान में भी भारतीय विदेश नीति के परंपरागत एवं नवीन मूल्य प्रभावी रहे हैं। वैश्वीकरण से उपजी असमानता एवं विकसित बनाम विकासशील संघर्ष को कम करने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर विकासशील एवं अल्पविकसित देशों को प्रतिनिधित्व किया

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

तो विकसित देशों के साथ वार्ताओं के द्वारा प्रभावी समाधान प्रस्तुत किये। चाहे वर्ल्ड बैंक समूह हो, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम जैसी संस्था या विश्व व्यापार संगठन, भारत ने हमेशा सहयोग किया है। भारतीय विदेश नीति का प्रमुख सिद्धांत ही यह है कि विश्व निश्चित एवं सामुदायिक 'वर्ल्ड ऑर्डर' से चलना चाहिए।

'संरक्षणवाद' आज विश्व अर्थव्यवस्था में प्रमुख समस्या बनी हुई है। इसका कारण विभिन्न देशों द्वारा संकीर्ण निजी हितों के लिये टैरिफ में वृद्धि करना है। किंतु यदि विभिन्न देश संकीर्ण हितों को त्यागकर 'परंपरागत भारतीय मूल्य 'वसुधैव कुटुंबकम' अर्थात् वैश्विक हितों पर ध्यान दे तो यह समस्या स्वतः दूर हो सकती है।

गौरतलब है कि वर्तमान

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

में 'पर्यावरण संकट' चरम पर है; 'जलवायु परिवर्तन' एवं 'ग्लोबल वार्मिंग' का खतरा मंडरा रहा है। भारत ने इन समस्याओं से निपटने के लिये वैश्विक समुदाय को पेरिस समझौते को लागू करने के लिये सहमति बनाने में भूमिका निभाई है। 'अंतरराष्ट्रीय सोलर एलायंस' के माध्यम से भारत ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों का उपयोग करने के लिये प्रतिबद्ध है। 'आतंकवादी समस्या' से निपटने के लिये भारतीय विदेश नीति के द्वारा अनेक राष्ट्रों के साथ साझा प्रयास किये जा रहे हैं।

जाहिर है कि भारत अपनी विदेश नीति में परंपरागत मूल्यों जैसे सहिष्णुता, अनाक्रमण की नीति, शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के माध्यम से विश्व के समक्ष समस्याओं का समाधान कर रहा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

है। साथ ही समय के साथ निरंतरता के अलावा परिवर्तन भी अपेक्षित है। यही कारण है कि आज विदेश नीति में अनेक नये तत्वों का समावेश हुआ है फलतः बेहतर कार्यान्वयन संभव हो पाया है।

———— : ————

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

खंड–B / SECTION–B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।
The best education is that which not only gives us information, but also ensures our coexistence with nature.

2. राजनीति में आदर्श अपेक्षित भी है और उपेक्षित भी।
Ideals in politics are required as well as neglected.

3. समान के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये और असमान के साथ असमान।
Equals should be treated equally and unequals unequally.

4. उस समाज में स्वतंत्रता अर्थहीन है, जिसमें गलती करने की आज़ादी न हो।
Liberty is meaningless in that society where there is no freedom to commit mistakes.

*

सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।

"शिक्षा का मतलब केवल तथ्यों को याद करना बस नहीं है बल्कि बेहतर शिक्षा वह है जो अवधारणात्मक हो एवं व्यक्ति में मूल्यों का निर्माण करे।"

स्वामी विवेकानंद का उपरोक्त कथन दरअसल वास्तविक शिक्षा या सर्वोच्च शिक्षा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

की अवधारणा प्रस्तुत कर रहा है। इसमें निहित है कि मूल्यों का निर्माण ही सर्वोच्च शिक्षा है। ऐसे मूल्यों का निर्माण करना जो मानव को प्रगति की राह पर भी ले जायें एवं प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व भी बनाये रखा जा सके। प्रश्न यह है कि इसके आयाम क्या होंगें एवं सर्वोच्च शिक्षा देने के लिये क्या किया जाना अपेक्षित है? एक प्रश्न यह भी है कि यदि प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व नहीं बनाया गया तो इसके क्या परिणाम हो सकते हैं?

शिक्षा के अंतर्गत 'सीखना' आता है जिसे 'अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग' ने 4 आयामों के अंतर्गत परिभाषित किया है। इसके अनुसार ~~सीखने~~ व्यक्ति को जानने, करने, होने एवं रहने के लिये

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सिखाना शिक्षा है। अर्थात् समाज में कार्य प्राप्त करने, उसको समझने एवं अच्छा इंसान बनने के लिये शिक्षा आवश्यक होती है।

किंतु शिक्षा में मूल्यों को धारण करना भी शामिल है। इन्हीं मूल्यों के विकास से सामाजिक एवं नैतिक व्यवस्था का निर्माण होता है जो समाज के सफल संचालन के लिये आवश्यक है।

इन मूल्यों के अंतर्गत मानव के प्रति प्रेम, प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता एवं सहअस्तित्व की भावना, सहिष्णुता, धैर्य, अनुशासन आदि गुण शामिल है जिनको उपलब्ध कराने पर शिक्षा, सर्वोच्च शिक्षा कही जायेगी।

ध्यातव्य है कि शिक्षा की प्रक्रिया परिवार से ही शुरू हो जाती है। यहाँ बच्चा प्रेक्षण एवं क्लासिकल कंडीशनिंग

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

आदि तरीकों से सीखता है अतः परिवार के मूल्यों का सीधा प्रभाव बच्चे पर होता है। इनमें से सबसे अधिक प्रभाव माँ का होता है। गांधी, कलाम आदि महान पुरुषों ने अपनी जिंदगी पर माँ के मूल्यों का प्रभाव बताया है।

इसके अलावा समाज, विद्यालय एवं अन्य संगठनों द्वारा शिक्षा के विभिन्न आयामों को सिखाया जाता है।

विचारणीय प्रश्न यह है कि यदि शिक्षा केवल जानकारी देने वाली हो तो क्या होगा? मूल्यों से रहित शिक्षा हमें रोजगार तो प्रदान कर सकती है किंतु यह मानवता एवं प्रकृति के अस्तित्व के लिये नकारात्मक है।

गौरतलब है कि संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने हमें ~~प्रकृति~~ हमने ने प्रकृति को संकट में डाल दिया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

पहले मनुष्य और प्रकृति का सह-अस्तित्व था एवं मनुष्य उतना ही उपयोग करता था जितना उसे आवश्यक होता था फलतः संसाधनों का अपक्षय नहीं हुआ। किंतु विकास की गति बढ़ती गई एवं मानव की बौद्धिक क्षमताएँ बढ़ने से औद्योगीकरण का दौर आ गया। प्रकृति के संसाधनों का अनियंत्रित दोहन लगातार बढ़ने से ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन जैसे खतरे सामने हैं।

प्रकृति के पास हमारी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिये पर्याप्त संसाधन हैं किंतु लालच पूरा करने के लिये नहीं।

- महात्मा गांधी

मनुष्य की बौद्धिक क्षमताएँ बढ़ने के बाद भी यह खतरा बढ़ना इस बुनियादी प्रश्न को सामने लाता है कि केवल शिक्षा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मानवता के संपूर्ण विकास के लिये आवश्यक नहीं है। इस प्रकार की शिक्षा ने मनुष्य की भौतिक आवश्यकताएँ पूरी की किंतु यह विकास संधारणीय नहीं था फलतः आगे आने वाली पीढ़ियों के लिये खतरा पैदा हो गया।

मनुष्य अपनी क्षमताओं का विकास करते- करते प्रकृति को भी नियंत्रित करने लगा, किंतु प्रकृति, मनुष्य से नहीं नियंत्रित हो सकती। फलस्वरूप प्रकृति मनुष्य के अस्तित्व के लिये खतरा नजर आने लगी है।

आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य प्रकृति को नियंत्रित नहीं बल्कि सह- अस्तित्व में रहे जिससे प्रकृति के सहयोग से संसाधनों के समुचित दोहन के द्वारा मानव सभ्यता का संधारणीय

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

विकास हो। इसके लिये शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता है।

शिक्षा व्यवस्था में प्रकृति से जुड़े पहलुओं को विद्यालयी स्तर से शामिल करना चाहिये। मानव की बुद्धि इस प्रकार विकसित की जाये कि वे प्रकृति के संसाधनों का दुरुपयोग न करें वरन् संरक्षण एवं समुचित प्रबंधन में योगदान दें।

प्रकृति के साथ सह अस्तित्व से आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित रहेगा एवं समाज सकारात्मक विकास को सुनिश्चित कर सकेंगे। मनुष्य का संपर्क प्रकृति से बढ़ने से समानता की भावना स्थापित होगी एवं तनाव में कमी होगी। चूँकि प्रकृति सबसे अच्छी शिक्षक है अतः मानव जाति प्रकृति से सीखकर और अधिक उत्कर्ष की ओर बढ़ सकेंगे।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इस प्रकार प्रकृति के साथ-सह-अस्तित्व मूलक शिक्षा के द्वारा पर्यावरण एवं मानव जाति का भविष्य सुरक्षित रहेगा।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation